आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 08-05-2016 ● अंक-518 ● तारीख - 09 मई 2016, वैशाख शुक्ल - 3 ● सोमवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)

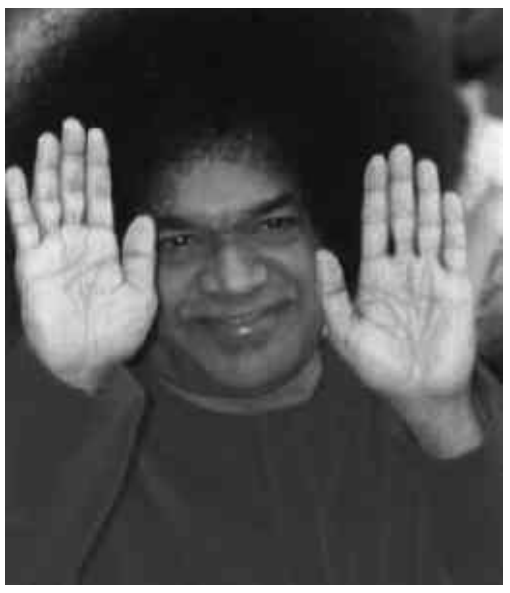

भक्ति प्रदर्शन

पूजा–गृह में चित्रों एवं प्रतिमाओं को अत्यधिक पुष्पमालाओं से लादना तथा अपनी भक्ति प्रदर्शन के लिए बहुमुल्य बर्तनों और भेंटों का प्रयोग करना केवल मात्र धन का अपव्यय है। यह दिव्यता का ह्रास कर आत्मवंचना की ओर उन्मुख करता है। दिव्यता तो अनुग्रह प्रदान करने के लिए केवल शुद्ध हृदय की खोज करती है। –**श्री सत्य सांई बाबा**

पैदा होने के 22 मिनट के भीतर बच्ची को मिला आधार नंबर

राखी को पैदा हुए 1 घंटा भी नहीं हुआ होगा कि उसे आधार नंबर मिल गया। मध्य प्रदेश के झाबुआ के स्थानीय हैल्थ सेंटर में पैदा हुई जन्म लेने के 22 मिनट के भीतर आधार नंबर मिल गया है और एक हफ्ते के भीतर बच्ची के परिवार को आधार कार्ड मिल जाएगा। केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने इसे लेकर ट्वीट किया और खुशी जाहिर की।

पिछले साल ही यूआईडीएआई ने अपने नियमों में ढील दी है। इसके दायरे में पांच वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों को भी लाया गया है। यूआईडीएआई की बेवसाइट के मुताबिक, इससे पहले बच्चों को आधार के लिए पंजीकृत नहीं किया जाता था, क्योंकि 5 साल तक के बच्चों के बायोमेट्रिक डेटा यानी उंगलियों के निशान बदलते रहते हैं, लेकिन पीएम मोदी के निर्देश के बाद नियमों में ढील दी गई है।

नए नियमों के मुताबिक, जिनका नाम भी नहीं है वे बच्चे भी आधार के लिए पंजीकरण कर सकते हैं। बायोमेट्रिक डिटेल 6 की उम्र के बाद लिए जा सकते हैं। यूआईडीएआई की वेबसाइट का कहना है कि अगर 5 साल से कम उम्र के बच्चे के लिए आधार कार्ड बनाया जाता है तो इसे माता–पिता के आधार कार्ड से जोड़ा जाएगा।

श्लोक

आलसस्य कुतो विद्या,
अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम्,
अमित्रस्य कुतः सुखम्।।

अर्थात्:– आलसी को विद्या कहाँ अनपढ़, मूर्ख को धन कहाँ निर्धन को मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ।

आलस्यं हि मनुष्याणां
शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः
कृत्वा यं नावसीदति।।

अर्थात्:– मनुष्यों के शरीर में रहने वाला आलस्य ही (उनका) सबसे बड़ा शत्रु होता है। परिश्रम जैसा दूसरा (हमारा)कोई अन्य मित्र नहीं होता क्योंकि परिश्रम करने वाला कभी दुखी नहीं होता।

मनुष्य की महान सफलता कोरिंथ नहर

यूनान में कोरिंथ की खाड़ी और सरोनिक की खाड़ी को मिलाने के लिए पहाड़ों को चीरकर 6.4 किमी लंबी कोरिंथ नहर बनाई गई थी। यह स्वेज और पनामा नहर की तरह मनुष्य की महान सफलताओं में से एक है। विश्व की महत्वपूर्ण नहरों में इसका स्थान है। 1881 में निर्माण शुरू होकर 25 जुलाई 1893 के दिन पहली बार इसका इस्तेमाल किया गया। समय और ईधन बचाने के लिए इसे बनाया गया था। कुछ जगहों पर यह संकरी है, इसलिए जहाजों को खींचने के लिए नावें तैनात रहती हैं। इसका इस्तेमाल पर्यटन नौकाओं के लिए ज्यादा होता है। फिर भी साल में 11 हजार जहाज यहां से गुजरते हैं। इसकी चट्टानें 300 फीट ऊंची हैं। नहर का ऊपरी हिस्सा 81 फीट और निचला हिस्सा 70 फीट चौड़ा है। औसत 148 मीटर की ऊंचाई पर चट्टानों पर ट्रेन, बड़े वाहन और छोटे वाहन गुजरने के लिए तीन पुल बने हैं। नहर का ट्रैफिक वन–वे होने के कारण एक बार में एक ही जहाज को गुजरने की अनुमति दी जाती है, क्योंकि चट्टानों से भूस्खलन का खतरा भी होता है।

अक्षय तृतीया

पुराणों और शास्त्रों के मतानुसार इस दिन का धार्मिक महत्व यह है कि इस दिन से सतयुग का अंत आरम्भ एवं द्वापर का अंत अर्थात त्रेता युग का प्रारम्भ हुआ था। भगवान विष्णु के 24 अवतारों में भगवान परशुराम, नर–नारायण एवं हयग्रीव आदि तीन अवतार अक्षय तृतीया के दिन ही इस धरती पर अवतरित हुए। हिन्दुओं के महातीर्थ स्थल माने जाने वाले बद्रीनारायण धाम के पट भी अक्षय तृतीया को खुलते हैं।

इसके अतिरिक्त वृंदावन के बांके बिहारी के चरण दर्शन भी केवल अक्षय तृतीया को होते हैं। अक्षय तृतीया (अखातीज) को अनंत–अक्षय–अक्षुण्ण फलदायक कहा जाता है। जो कभी क्षय नहीं होती उसे अक्षय कहते हैं।

इस दिन किया जाने वाला कार्य अनन्त फल देता

इस दिन बिना पंचांग देखे कोई भी शुभ कार्य किया जा सकता है, क्योंकि शास्त्रों के अनुसार इस दिन स्वयंसिद्ध मुहूर्त माना गया है। समस्त शुभ कार्यों के अलावा प्रमुख रूप से शादी, स्वर्ण खरीदने, नया सामान, गृह प्रवेश, पदभार ग्रहण, वाहन क्रय, भूमि पूजन तथा नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं। इस दिन किया जाने वाला दान भी अक्षय माना जाता है। लोग जल से भरे मटके, पंखे, खरबूजा, ककड़ी, आम आदि फलों का का दान करते हैं। इसी दिन नए अनाज के बीजों का भी रोपण किया किया जाता है ।

धर्म के कारण माने अथवा परम्परा में, इस प्रकार किये गए दान का लाभ जनता को मिलता ही। भीषण ताप में विभिन्न स्थानों पर दान किये गए जल के पात्र और फल आदि राहगीरों/कृषकों/जरुरतमंदों की भूख प्यास का इतंजाम हो ही जाता था।

कहते हैं कि इस दिन जिनका परिणय–संस्कार होता है उनका सौभाग्य अखंड रहता है। धर्म और परंपरा का दैनिक जीवन में इस तरह घुलना मिलना रहा है कि कई बार यह तय करना मुश्किल होता है कि धर्म से परंपरा चली या परम्परा ही धर्म की प्रेरक रही। यह समय गेहूं, जौ, चना और सरसों की फसल काटने का होता है। भारत कृषि प्रधान देश रहा और यहाँ की बड़ी आबादी की जीविका का साधन भी कृषि ही रहा। कृषकों के कार्यकलाप और सुख–दुःख फसलों के बोने और काटने के समय पर निर्भर होते रहे। इस समय उनके पास अर्थ की व्यवस्था होती और फुर्सत भी इसलिए ग्रामीणों में आखा तीज शुभ मुहूर्त के साथ ही सुविधा का समय भी होता रहा।

गुड़राब और गेहूँ का खीच/खिचड़ा – (अक्षय –तृतीया जिसे राजस्थान में आखा तीज भी कहते हैं) को विशेष प्रसादी के भोजन में बाजरे या गेहूं का खिचड़ा गुड़राब (आटे को गुड के पानी में पकने तक उबालकर) और आखी (साबुत) मंगोड़ी की सब्जी, आखी ही ग्वार फली धूणी दी हुई। ग्वार फली को उबालकर उसके रेशे निकालकर बर्तन में जलता कोयला रख उस पर घी डाल कर (जिस भी मसाले की खुशबू उसमें डालनी हो वह भी साथ ही डाल देते हैं,) ढक्कन से ढक देते हैं। कोयले के धुंए की भीनी–भीनी खुशबू उसमें रच बस जाती है।

परंपरा में अन्य खाद्य पदार्थों के अलावा पांच बाटियां बनाकर रसोई में ऊपर आले में रख देने का भी रिवाज रहा जो वर्ष पर्यन्त वही रखी होती थी। इसके पीछे भी रसोई/घर में अन्न के अक्षय भंडारण की कामना रही होती होगी। इन सभी परम्पराओं के पीछे नए अनाज का स्वागत और नई फसल की तैयारी और शुभेच्छा भी रही है।

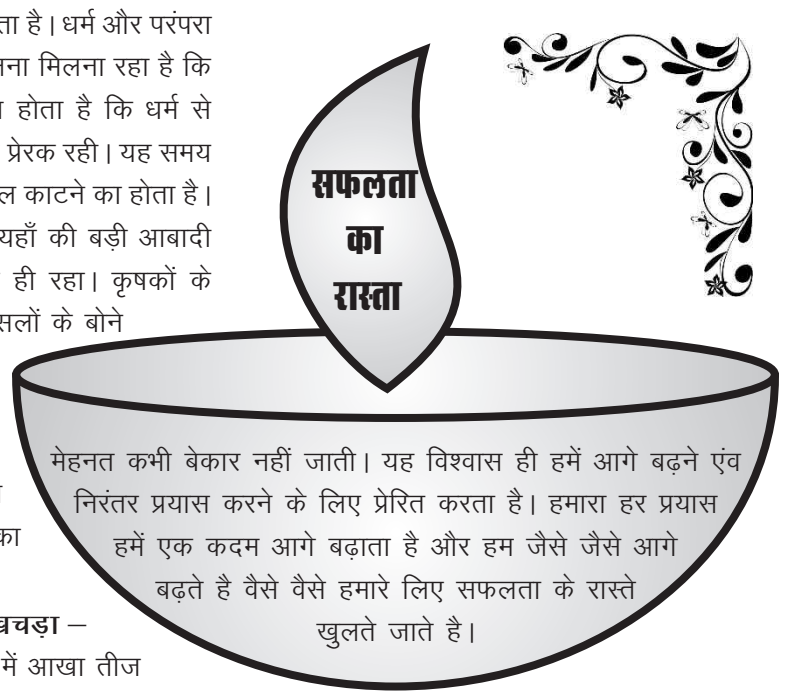

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल

संस्थान के सेवा-शिविर भोपाल व जम्मू काश्मीर

अद्भूत अविस्मरणीय अलौकिक कृपा ईश्वर की महाराज! अलौकिक कृपा। ये लौकिक कृपा नहीं है सेवा की, सेवा जब हम करते है तो चेतना शक्ति अधिक हो जाती है चेतन मन से देखिये एक ही चेतना पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है जैसे – एक ही हवा, गंगा जी का जल, यमनोत्री, गंगोत्री, हरिद्वार जी, कानपुर जी ओ.... हो.... महाराज। पटना, कलकता होते हुए गंगा सागर में प्रवेश करता है। जैसे एक ही जल वैसे ही एक ही चेतना। वही चेतना मुझे पिण्डवाडा की पीड़ा में ले जाती है, सन् 1976 की घटना है वही चेतना मुझे वर्तमान के इस इन्दौर महानगर में ले आई है। जहां मैं बैठा हुआ अभी–अभी कुछ मिनटों पहले विपश्यना ध्यान के द्वारा शान्ति, सचेतता एवं समभावता।

''ये प्रेम की धारा बहाय रही रे, नारायण सेवा ये तो भाइयों को गले मिला रही रे,

नारायण सेवा रे, ये नारायण सेवा रे,
प्यार की गंगा बहाय रही रे,
ये नारायण सेवा।''

इन्दौर नगरी महारानी अहिल्या होल्कर की नगरी, जिन महारानी अहिल्या बाई ने पूरे भारत के मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाया, टूट–फूट हो गई थी और पुनः नयापन दिया, वैसे ही विकलांगों की टूट–फूट हो गई महाराज! घुटने मुड़ते नहीं, पंजे, पंजे जिस पर पूरे शरीर का वजन आता है तो ये टूट–फूट जो हो गई है।

क्रमश अगले अंक में ...

विश्व मातृ–दिवस पर – माँ तुझे सलाम

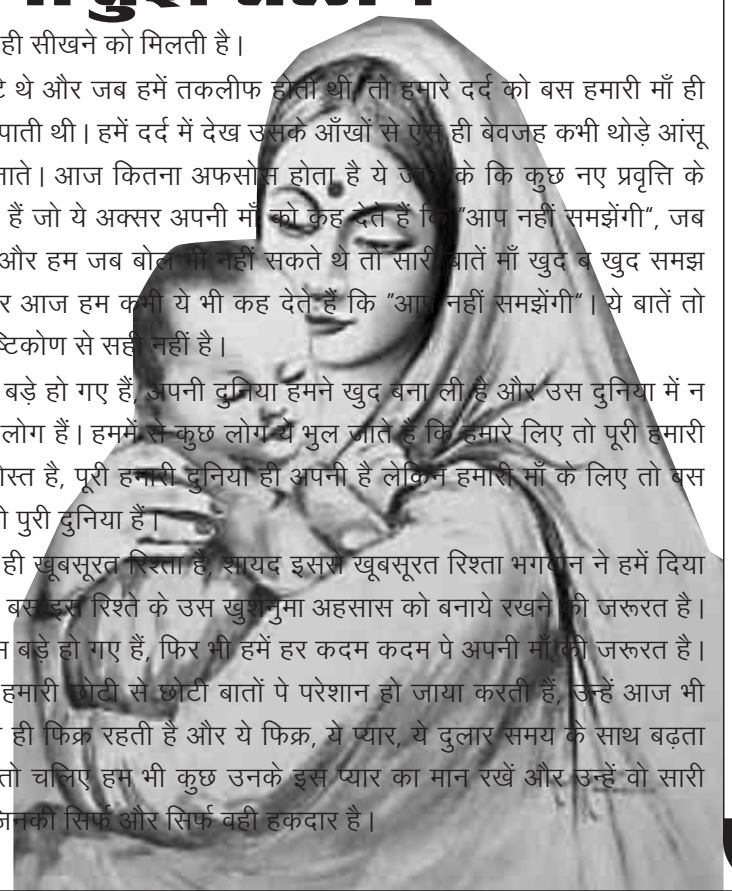

मातृ दिवस तो पुरे विश्व में अलग अलग दिनों पे मनाया जाता है। इस दिन की सबसे अच्छी बात ये है कि ये हमारी माँ के लिए समर्पित एक दिन है। वैसे तो हम अपनी माँ से सबसे ज्यादा प्यार करते हैं, लेकिन शायद ही कभी हम उन्हें ये जताते हैं कि हम उनसे कितना प्यार करते हैं। हमारे तरफ ये रिवाज नहीं कि हर एक छोटी बात पे "आई लव यू मॉम" कहें। ये थोड़ी आधुनिक सभ्यता की सोच है, लेकिन अच्छी बात है। हमारे तरफ तो बस आँखें और कुछ अहसास ही इस बात का इजहार कर देते हैं और माँ ये समझ जाती है की हम उनसे कितना प्यार करते हैं। पूरी दुनिया में किसी से भी पूछो तो एक ही बात कहेगा की "मेरी माँ के हाथ से बना खाना मुझे सबसे ज्यादा पसंद है", मेरी भी यही कहानी है। ऐसा सिर्फ इसलिए की हम सबसे ज्यादा अहमियत अपनी माँ को देते हैं।

ना जाने कितनी बातें हमने सीखी हैं अपनी माँ से। बचपन में जब हम छोटे थे और हमारा न कोई दोस्त न कोई साथी था तब माँ ही हमारी सबसे अच्छी दोस्त हुआ करती थी। हमारे साथ खेलना, पढ़ना। हमें चलना सीखाना। हमें अपने हाथों से खाना खिलाना, रात–रात भर जग के हमारे लिए लोरी गाना। हर बात पे डाँटना, हर बात पे प्यार झलकाना। अँगुली थाम के हमें बाहर ले जाना, ये बतलाना कि देखो बेटा, ये रास्ता सही है और ये गलत। पास बिठा के अच्छी – अच्छी और सच्ची बातें सीखाना। ये सीखाना की बेटा, ये काम कर के तुम अच्छे आदमी बनोगे, ये काम करोगे तो लोग तुम्हें बुरा कहेंगे। सच और झूठ, सही– गलत में फर्क सीखलाना। ये बतलाना की पैसे का इज्जत के आगे कोई मोल नहीं। ऐसी ही न जाने कितनी ऐसी बातें हैं जो किसी स्कूल, किसी कॉलेज में सिखलाया नहीं जाता, ये बातें जो की बहुत ही अनमोल हैं, हमें अपनी माँ से ही सीखने को मिलती है।

जब हम छोटे थे और जब हमें तकलीफ होती थी, तो हमारे दर्द को बस हमारी माँ ही महसूस कर पाती थी। हमें दर्द में देख उसके आँखों से ऐसे ही बेवजह कभी थोड़े आंसू भी निकल जाते। आज कितना अफसोस होता है ये जान के कि कुछ नए प्रवृत्ति के लोग ऐसे भी हैं जो ये अक्सर अपनी माँ को कह देते हैं कि "आप नहीं समझेंगी", जब हम छोटे थे और हम जब बोल भी नहीं सकते थे तो सारी बातें माँ खुद ब खुद समझ लेती थी, और आज हम कभी ये भी कह देते हैं कि "आप नहीं समझेंगी"। ये बातें तो किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं है।

अब जब हम बड़े हो गए हैं, अपनी दुनिया हमने खुद बना ली है और उस दुनिया में न जाने कितने लोग हैं। हममें से कुछ लोग ये भुल जाते हैं कि हमारे लिए तो पूरी हमारी दुनिया ही दोस्त है, पूरी हमारी दुनिया ही अपनी है लेकिन हमारी माँ के लिए तो बस हम ही उनकी पुरी दुनिया हैं।

ये एक बेहद ही खूबसूरत रिश्ता है, शायद इससे खूबसूरत रिश्ता भगवान ने हमें दिया ही नहीं। हमें बस इस रिश्ते के उस खुशनुमा अहसास को बनाये रखने की जरूरत है। आज जब हम बड़े हो गए हैं, फिर भी हमें हर कदम कदम पे अपनी माँ की जरूरत है। माँ आज भी हमारी छोटी से छोटी बातों पे परेशान हो जाया करती हैं, उन्हें आज भी हमारी उतनी ही फिक्र रहती है और ये फिक्र, ये प्यार, ये दुलार समय के साथ बढ़ता ही जाता है तो चलिए हम भी कुछ उनके इस प्यार का मान रखें और उन्हें वो सारी खुशियाँ दें जिनकी सिर्फ और सिर्फ वही हकदार है।

सम्पादकीय

यह विचार खास तौर पर उन महानुभावों के सामने रखा जा रहा है जो सेवा के महत्त्व से तो भलीभाँति परिचित हैं ही, परन्तु वे उस शुभ मुहुर्त की प्रतिक्षा में हैं, जब वे सेवा का यज्ञ प्रारम्भ कर सकें या ऐसे व्यक्ति की तलाश में हैं, जो इनकी सेवा पाने का अधिकारी है।

आदरणीय! आपश्री जानते हैं कि दुनिया में विरले ही लोग होंगे जो ये बता सकें कि उनको कौनसी व्याधि कब घेर लेगी? हमारी आँखों के सामने हर उम्र के हजारों–लाखों परिचित अपरिचित लोग अपनी इच्छाओं को मन में लिये हुए ही इस दुनिया से कूच कर जाते हैं और उनमें से कई ऐसे भी होते हैं जिनमें आप ही की तरह सेवा करने की तीव्र अभिलाषा थी और वे उपयुक्त समय और व्यक्ति का इन्तजार कर रहे थे। संकेत आपश्री समझे ही होंगे। मृत्यु जीवन का एकमात्र सत्य है, ध्रुव सत्य।

माननीय! हम जानते ही हैं लक्ष्मी चंचल होती है। आज वो आपके आँगन में हँसी खुशी से खेल रही है और भगवान न करे, कल रूठ जाये तो? आप तो सही आदमी और सही समय का इन्तजार ही करते रह गये न? इसलिये जिस क्षण हमारे मन में सेवा करने का विचार उत्पन्न हुआ, वही क्षण सबसे उत्तम है। प्रतीक रूप से मान लीजिये आपके पास एक रोटी है और आप सोचते हैं जब मेरे पास दो रोटी हो जायेगी तब मैं एक रोटी उस भूखे बच्चे को दे दूँगा। संयोगवश आपकी वो रोटी भी कुत्ता छीन ले गया, तब?

आज आपके पास एक रोटी है तो आप उसमें से एक कौर दे दीजिये। कल जब आपके पास दो रोटी हो तो पूरी एक दे दें। सेवा में भावना का महत्त्व है– मात्रा का नहीं। जी हाँ, श्रद्धेय, इन दिनों आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो सेवा का कोई ऐसा कार्य चुन लीजिये जिसमें शारीरिक श्रम ज्यादा न करना पड़े पर अनिश्चित जीवन के बेशकीमती समय को व्यर्थ न गँवाइये।

बुद्धि की खाद भर हैं किताबें

मात्र किताबों को पढ़ने का काम उनका है, जो बुद्धिमान है। किताबें बुद्धि की खाद हैं, किताबों के द्वारा बुद्धि का सिंचन होता है, किताबें तो बुद्धि की सहेली है, पर बुद्धि जीवन का अंतिम चरण नहीं, जीवन की समझ पाने का पहला आयाम है। बुद्धि से शुरूआत होती है, पर बुद्धि पर पूर्णाहुति नहीं। बुद्धि के आगे घाट और भी है। जीवन–जगत को वह व्यक्ति पढ़ना चाहेगा, जो किताबों के भी पार चलना चाहता है, वास्तविक सत्य और रहस्य को जीना और जानना चाहता है। ऐसे व्यक्ति से ही अध्यात्म का जन्म होता है, उसमें ही अध्यात्म का अभ्युदय होता है। अध्यात्म कोई शास्त्र या वाद नहीं है कि जिसे पढ़ा जाए, कि –जिसका पंडित हुआ जाए, कि जिस पर तर्क–वितर्क किया जाए, कि जिसे सिद्ध और साबित किया जाए। अध्यात्म तो एक दृष्टि है, एक ऐसी दृष्टि, जिसे हम अन्तदृष्टि कहेंगे। जिसकी अंतदृष्टि खुल गई, बुद्धि तो उसकी चेरी बन जाती है, वह बुद्धि के आगे के द्वारों को खुला हुआ पाता है। आगे जो स्थिति होती है, वह बुद्धि की नहीं, बोध और प्रज्ञा की होती है। उसकी स्थिति स्थितप्रज्ञ की, ऋजुप्राज्ञ की होती है। धर्म का जन्म जीवन और जगत के सार और असार, दोनों पहलुओं के समझने–बूझने से होता है। शास्त्रों और किताबों के आधार पर धर्म का आचरण जरूर चलता रहता है, पर जीवन में धर्म का जन्म नहीं होता। मैंने कहा– आवरण चलता रहता है, पर हकीकत तो यह है कि जब जीवन में धर्म का जन्म ही नहीं हुआ, तो उसका आचरण कैसे हो पाएगा। **–श्री चंद्रप्रभ**

शिव के ईष्ट राम, और राम के ईष्ट शिव: प्राची देवी

उदयपुर। सिंहस्थ महाकुंभ में आयोजित नारायण सेवा संस्थान कुम्भ खालसा के तत्वावधान में आयोजित सत्संग श्रृंखला की जानकारी देते हुए संस्थान संस्थापक साधु कैलाश जी मानव ने बताया कि सिंहस्थ में निरंतर नारायण सेवा के साधक दिव्यांग बंधुओं की सेवा–सुश्रुषा में संलग्न हैं। संस्थान अध्यक्ष डॉ. प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि क्षिप्रा मैया की गोद में सेवा के साथ–साथ पावन कथाओं के निर्झर प्रवाह भी अनवरत जारी है। इसी कड़ी में भगवद् भक्ति का रसास्वादन कराते हुए, भागवत प्रवक्ता पूज्या प्राची देवी जी ने कहा कि शिव को प्रसन्न करना है तो राम जी का भजन करो और राम जी को प्रसन्न करना है तो शिव जी को प्रसन्न करो, क्योंकि दोनों ही एक दूसरे के ईष्ट हैं। सांध्य वेला में पं. रामकृशण शास्त्री जी ने भगवान के बालस्वरूप का सुन्दर चित्रण करते हुए भक्तों को आनन्द विभोर कर दिया। संचालन कृपा व्यास व जितेंद्र भट्ट ने किया।

परशुराम जयन्ती

अक्षय तृतीया परशुराम जयन्ती और चार धाम यात्रा की याद दिलाती है। यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ के कपाट भी इसी दिन खुल जाते है और बांके बिहारी मंदिर, वृंदावन में चरण विग्रह के दर्शन वर्ष में एक बार आज के दिन ही होते हैं। इसी दिन स्वर्गलोक से गंगा भू–लोक में अवतरित हुई थीं, अतः इस दिन गंगा में स्नान करना विशेष पुण्यदायक माना जाता है। गणेश जी ने महाभारत लेखन की शुरुआत अक्षय तृतीया को ही की थी। आज के दिन त्रेता युग की शुरुआत होना माना जाता है।

हिंदू धर्म ग्रंथों में कुछ महापुरुषों का वर्णन है जिन्हें आज भी अमर माना जाता है। अक्षय तृतीया के पुण्य दिवस पर ही भगवान परशुराम अवतरित हुए है। परशुराम भगवान विष्णु के आवेशावतार थे। भगवान परशुराम के पिता भृगुवंशी ऋषि जमदाग्नि और माता राजा प्रसेन्नजित की पुत्री रेणुका थीं। ऋषि जमदाग्नि बहुत तपस्वी और ओजस्वी थे। ऋषि जमदाग्नि और रेणुका के पांच पुत्र रुक्मवान, सुखेण, वसु, विश्ववानस और परशुराम हुए। एक बार रेणुका स्नान के लिए नदी किनारे गई। संयोग से वहीं पर राजा चित्ररथ भी स्नान करने आया था, राजा चित्ररथ सुंदर और आकर्षक था। राजा को देखकर रेणुका भी आसक्त हो गईं। किंतु ऋषि जमदग्नि ने अपने योगबल से अपनी पत्नी के इस आचरण को जान लिया। उन्होंने आवेशित होकर अपने पुत्रों को अपनी मां का सिर काटने का आदेश दिया। किंतु परशुराम को छोड़कर सभी पुत्रों ने मां के स्नेह के बंधकर वध करने से इंकार कर दिया, लेकिन परशुराम ने पिता के आदेश पर अपनी मां का सिर काटकर अलग कर दिया। क्रोधित ऋषि जमदग्नि ने आज्ञा का पालन न करने पर परशुराम को छोड़कर सभी पुत्रों को चेतनाशून्य हो जाने का शाप दे दिया। वहीं परशुराम को खुश होकर वर मांगने को कहा। तब परशुराम ने पूर्ण बुद्धिमत्ता के साथ वर मांगा। जिसमें उन्होंने तीन वरदान मांगे – पहला, अपनी माता को फिर से जीवन देने और माता को मृत्यु की पूरी घटना याद न रहने का वर मांगा। दूसरा, अपने चारों चेतनाशून्य भाइयों की चेतना फिर से लौटाने का वरदान मांगा। तीसरा वरदान स्वयं के लिए मांगा जिसके अनुसार उनकी किसी भी शत्रु से या युद्ध में पराजय न हो और उनको लंबी आयु प्राप्त हो। उन्होंने पिता से वेदों का ज्ञान प्राप्त किया और पिता के सामने धर्नुविद्या सीखने की इच्छा प्रकट की। महर्षि जमदग्नि ने उन्हें हिमालय पर जाकर भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए कहा। पिता की आज्ञा मानकर राम ने ऐसा ही किया। उस बीच असुरों से त्रस्त देवता शिवजी के पास पहुंचे और असुरों से मुक्ति दिलाने का निवेदन किया। तब शिवजी ने तपस्या कर रहे राम को असुरों को नाश करने के लिए कहा। राम ने बिना किसी अस्त्र की सहायता से ही असुरों का नाश कर दिया। राम के इस पराक्रम को देखकर भगवान शिव ने उन्हें अनेक अस्त्र–शस्त्र प्रदान किए। इन्हीं में से एक परशु (फरसा) भी था। यह अस्त्र राम को बहुत प्रिय था। इसे प्राप्त करते ही राम का नाम परशुराम हो गया। शिवजी ने परशुराम को अस्त्र–शस्त्र का ज्ञान दिया। भगवान विष्णु के छठे अवतार भगवान परशुराम माने जाते हैं। भगवान परशुराम के बारे में यह प्रसिद्ध है कि उन्होंने तत्कालीन अत्याचारी और निरंकुश क्षत्रियों का 21 बार संहार किया।

कार्त्तवीर्य अर्जुन ने जमदग्नि से कामधेनु गौ की मांग की किन्तु जमदग्नि ने उन्हें कामधेनु गौ देना स्वीकार नहीं किया। इस पर कार्त्तवीर्य अर्जुन ने क्रोध में आकर ऋषि जमदाग्नि के आश्रम को उजाड़ दिया और कामधेनु को ले जाने लगा। तभी कामधेनु सहस्त्रार्जुन के हाथों से छूट कर स्वर्ग की ओर चली गई। कार्त्तवीर्य अर्जुन को बिना कामधेनु गौ के वापस लौटना पड़ा। जब यह घटना हुई उस समय परशुराम वहां मौजूद नहीं थे। ।अपने पिता के आश्रम की दुर्दशा देखकर । पराक्रमी परशुराम ने उसी वक्त दुराचारी सहस्त्रार्जुन और उसकी सेना का नाश करने का संकल्प लिया। परशुराम अपने परशु अस्त्र को साथ लेकर सहस्त्रार्जुन के नगर महिष्मतिपुरी पहुंचे। जहां सहस्त्रार्जुन और परशुराम का युद्ध हुआ। किंतु परशुराम के प्रचण्ड बल के आगे सहस्त्रार्जुन बौना साबित हुआ। भगवान परशुराम ने दुष्ट सहस्त्रार्जुन की हजारों भुजाएं और धड़ परशु से काटकर कर उसका वध कर दिया। सहस्त्रार्जुन के वध के बाद पिता के आदेश से इस वध का प्रायश्चित करने के लिए परशुराम तीर्थ यात्रा पर चले गए। इसी बीच मौका पाकर सहस्त्रार्जुन के पुत्रों ने तपस्यारत ऋषि जमदाग्रि का उनके ही आश्रम में सिर काटकर वध कर दिया। जब परशुराम तीर्थ से वापिस लौटे तो आश्रम में माता को विलाप करते देखा और माता के समीप ही पिता का कटा सिर और उनके शरीर पर 21 घाव देखे।

इसके बाद उन्होंने इस पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रियों से रहित कर दिया और उनके रक्त से समन्तपंचक क्षेत्र में पांच सरोवर भर दिए। अन्त में महर्षि ऋचीक ने प्रकट होकर परशुराम को ऐसा घोर कृत्य करने से रोक दिया।

भगवान परशुराम के चरित्र का सबसे बड़ा पक्ष यह है कि उन्होंने क्षमा करने की परंपरा को एक सार्थक अर्थ दिया। ब्रह्मा के युग से माना जाता है कि ब्राह्मण को क्षमा करनी चाहिए। बहुत सारे लोग ऐसे मिल जाऐंगे, जो यह बताऐंगे कि ब्राह्मण के पास ताकत नहीं होती, इसलिए वह क्षमा करने के लिए मजबूर होता है। लेकिन भगवान परशुराम का चरित्र हमें यह बताता है कि क्षमा करने वाला ब्राह्मण मजबूर नहीं, वास्तव में अपार शक्तिशाली होता है। उन्हें क्षत्रियों के दुश्मन के रूप में प्रस्तुत करना गलत है। अगर ऐसा होता तो वे भगवान राम को पूजनीय क्यों मानते। भगवान परशुराम जी शास्त्र एवम् शस्त्र विद्या के पूर्ण ज्ञाता हैं। परशुराम द्वारा तत्कालीन दुष्ट और अत्याचारी क्षत्रियों का अंत कर न केवल जगत को उनके आतंक से मुक्त कराया बल्कि इसके द्वारा एक लौकिक संदेश भी दे गए कि किसी भी व्यक्ति और समाज को असत्य, अन्याय और अत्याचार का निर्भय होकर, पुरुषार्थ और पराक्रम के साथ विरोध करना चाहिए। किंतु उसका उद्देश्य साथर्क होना चाहिए ।प्राणी मात्र का हित ही उनका सर्वोपरि लक्ष्य होता है। भगवान शिव, परशुराम जी के गुरू हैं। भगवान परशुराम का दिव्य चरित्र जीवन मूल्य सिखाता है। भगवान परशुराम ने जीवन में माता–पिता, परिवार, भातृ प्रेम और कर्तव्यों के प्रति सर्मपण के ऐसे ऊंचे आदर्श प्रस्तुत किए, जो आज भी व्यक्ति और समाज को अलगाव और बिखराव से बचाना सिखाता है।

व्यवहार है जीवन का राजमार्ग

(मानव धर्म श्रृंखला का चतुर्थ (4) पुष्प)

बुद्धि की शुद्धि–व्यवहार का आधार

ईश्वर को वन्दन, ऊँ वर्णानामर्थसंघानां....

अच्चुतं केशवं रामनारायणं,
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरम् माधवंश्रीगोपिका वल्लभं,
श्री जानकी नायकं श्रीरामचंद्र भजे।।
श्री मानव धर्माय नमः। (1)

ऐसी पावन, पुनीत, हृदय का ईश्वर से सबंध स्थापित करने वाली, अद्भुत, अलौकिक शब्दों की रसधारा के साथ ब्रह्माण्ड की समस्त दैदिप्यमान दिव्य शक्तियों के श्री चरणों में वंदन करते हुए,

पूज्य गुरूदेव, साधु कैलाश जी 'मानव' को हम व्यास पीठ पर नमन करते हुए अभिवादन करते हैं। संस्था के वरिष्ठ साधक श्री लक्ष्मी लाल जी गाड़री से प्रार्थना करता हूँ, कृपया मंच पर पधार कर पूज्य गुरूदेव जी का माल्यार्पण कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त करें।

गुरूजी– मंगलकामना बाबू , धन्यवाद आपको, जय श्री कृष्णा, जय श्री कृष्णा।।

महिम जी– विश्व भर से पधारे हुए रोगी भाई बहनों का भी नारायण सेवा के संस्थापक श्रद्धेय श्री कैलाश जी मानव, संस्थापिका श्रीमती कमलादेवी जी, संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशांत जी अग्रवाल, श्रीमती वंदना जी, श्री देवेन्द्र जी चौबीसा, श्री जगदीश जी आर्य एवं इस अन्तर्राष्ट्रीय सेवा परिवार के समस्त साथीगणों की ओर से, इस तपोभूमि के तपस्वियों की ओर से आप सभी का अनंत हृदय की गहराइयों से प्रणाम करते हुए अभिवादन करता हूँ , नमन करता हूँ। आज शुभ कार्य की शुभ बेला में आइये दीप प्रज्ज्वलन की ओर चलते हैं। इस कार्य के लिए मैं आमंत्रित करता हूँ हमारे बीच में मथुरा से पधारे हुए श्री सतीश जी को, भाई श्री लक्ष्मी लाल जी को, भाई श्री नृसिंह जी को, श्री गोविंद जी को, सभी से प्रार्थना करता हूँ , कृपया पधार कर पंडित जी श्री देवनारायण जी के सानिध्य में स्वरलहरियों के साथ कार्यक्रम में प्रवेश करावे –

–: गणेश मंत्र :–

ऊँ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः
निर्विघ्नं कुरूमेदेव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
या देवी सर्वभुतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमो नमः।।(2)

गणपति गजानन महाराज की जय। ईश्वर के चरणों में वदंन करते हुए आईये अब मैं प्रार्थना करता हूँ व्यासपीठ पर विराजमान, इस कथा के पुरोधा , अपने श्रीमुख से अपनी मंगल वाणी से हम सभी को आह्लादित करें और मानव धर्म ग्रंथ की यह कथा जहां पर इस प्रकार नारायण सेवा संस्थान के द्वारा आपश्री के सहयोग के साथ आज ये सेवा का विशाल कार्य संचालित किया जा रहा है। उसके बारे में जानें, जीवन जीने की प्रेरणा जानें, उन मानवीय प्रसंगों को जानें जिनकी यात्रा करते हुए आज यह संस्थान आपके समक्ष सेवा में तत्पर है।

चलिए जयकारे के साथ हम कथा में प्रवेश करते हैं। बोलिये श्री कृष्णचंद्र भगवान की जय, बोलिए श्री रामचंद्र भगवान की जय।

क्रमशः

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com